समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक

डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक

प्रो. रमा

संपादक

डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग

रीमा प्रजापति

ले-आउट

स्कोप सर्विसेज, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय

मकान नं. 189, ब्लॉक-एच

विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार

एफ-114, तृतीय तल, SLF वेद विहार,

नियर: शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता

आजीवन : 5000/-रुपए

संपर्क : 9871907081

वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com

E-mail : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण

हरिन्द्र तिवारी

हंस प्रकाशन, दिल्ली

मो. : 7217610640, 9868561340

ईमेल : hansprakshan88@gmail.com

वेबसाइट : www.hansprakashan.com

विभाजन की त्रासदी और मंटो 7

विजय पालीवाल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का विश्लेषणात्मक अध्ययन 11

डॉ. अजीत कुमार बोहत

स्त्री अस्मिता संघर्ष और राजकमल चौधरी का हिंदी कथा साहित्य 15

अजीत सिंह

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की इतिहास-दृष्टि 18

डॉ. अमित सिन्हा

मध्यवर्गीय जीवन और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का कहानी संग्रह 'आधा कमरा' 20

अनिता देवी

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका 23

डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

राहुल सांकृयायन का यात्रावृत्त साहित्य में वर्णित धार्मिक पक्ष 27

अरूण माधीवाल

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के पक्षधर : सुब्रह्मण्य भारतीय 30

डॉ. के. बालराजू

नेतृत्व और सम्प्रेषण का यथार्थ 34

डॉ. कुमार भास्कर

नयी कविता और कुँवर नारायण 37

भावना

आधुनिक दिल्ली हिंदी रंगमंच का स्वरूप 40

डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह

स्त्री अस्मिता का मिथक 43

गजेन्द्र पाठक

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत-नेपाल संबंध 45

डॉ. गौरव कुमार शर्मा

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित का सामाजिक-बोध 47

गौतम कुमार खटीक

भारत में राजनीतिक विकास एवं संविधान संशोधन : एक विश्लेषण 50

गोविन्द नैनीवाल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित*

भारत में जलवायु परिवर्तन एवं सरकारी नीतियां 54
हंसा मीना

बेटी उपन्यास में बेटी की गौरव गाथा 57
डॉ. कमलेश कुमारी

रामवृक्ष बेनीपुरी के गद्य साहित्य की भाषा 59
डॉ. करतार सिंह

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर संवाहक : मैथिलीशरण गुप्त 62
डा. राम किंकर पाण्डेय

सोहन लाल 'रामरंग' विरचित 'उत्तर साकेत' महाकाव्य में रस-निरूपण 65
डॉ. मधु शर्मा

सिनेमा में कैमरे की भाषा 69
महेश सिंह

महिला सशक्तिकरण 72
डॉ. मंजू ठाकुर

भाषा विमर्श और गाँधी 74
प्रभंजन कुमार झा

आधुनिकता और समकालीनता का अंतर्संबंध 76
डॉ. प्रवेश कुमार

राजस्थान में पुलिस मित्र योजना : एक अवलोकन 80
राहुल वर्मा

असहमति की दृढ़ता और ख़ामोशियों का शिल्पकार : निर्मल वर्मा 82
निर्मल वर्मा@डॉ. रामेश्वर राय

उम्मीद बनी रहेगी तब तक... 84
रश्मि नरताम

भारतीय बोलियों की उपेक्षा, भाषा का मानकीकरण और राजनीति 88
डा. रिम्पी खिल्लन सिंह

केदारनाथ सिंह के काव्य में प्रकृति 91
डॉ. रूपेश कुमार

सुषम बेदी के उपन्यास में स्त्री-मन की पीड़ा ('मैंने नाता तोड़ा' के विशेष संदर्भ में) 94
संगीता यादव

आंचलिकता का प्रतिनिधि उपन्यास 'मैला आँचल' : एक विश्लेषण 96
डॉ. श्रुति शर्मा

अफगानिस्तान की परिवर्तित स्थिति का भारत पर प्रभाव 98
डॉ.सोनाली सिंह

हिंदी, उर्दू एवं पंजाबी कहानियों में भारत विभाजन की त्रासदी: एक अध्ययन 103
सुकांत सुमन

उपनिषदों में सष्ट्युत्पत्ति विद्या 107
डॉ. उमा शर्मा

'रेणु की 'कहानी' और राजनीति' 110
विजय यादव

निराला की लम्बी कविताओं की शिल्पगत विशेषताएं 112
डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह

'पहला राजा' : मिथक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ 117
डॉ. विपुल कुमार

तीसरी सत्ता की मार्मिक दास्तान : पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा 120
डॉ. यशपाल सिंह राठौड़

महिलाओं के घरेलू कार्यो का राष्ट्रीय विकास में योगदानः आर्थिक पहचान का नया दौर 124
डा. सुनीता पारीक

भक्तिकालीन संतो का साहित्यिक योगदान 127
डॉ. अनिता वेताह

भारत में समावेशी शिक्षा : एक विवेचनात्मक अध्ययन नीति 130
डॉ प्रतिभा रानी सिंह

अज्ञेय की प्रयोगशील कविता 133
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप और उद्देश्यः एक संक्षिप्त अवलोकन 136
राहुल कुमार झा

वैकल्पिक महिला आरक्षण विधेयक 138
डॉ. स्वाति कुमारी

प्रभा खेतान लिखित उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में स्त्री विमर्श 140
डॉ. सरोज पाटील

नई शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण 143
डा. कालिंदी लालचंदानी

डॉ. शाहनाज महेमुदशा सय्यद 145
????

भारत में संविधान के नीति-निदेशक तत्व एवं सम्पोषणीय विकास 148
डा. अशोक कुमार

आहत मुद्राओं के मूल्यवर्ग एवं बाजार मूल्य तथा उनका पारस्परिक संबंध 151
प्रीति सिंह

समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन संघर्ष ('धरती धन न अपना' के वि ोष संदर्भ में) 154
डॉ. नवनाथ गाड़ेकर

कोच्ची मुज़िरिस बिएन्नाले में प्रदर्शित कुछ प्रमुख इंस्टालेशन आर्टः चतुर्थ संस्करण के विशेष संदर्भ में 156
शिखा सोनकर

जगदीश चंद्र माथुर के एकांकियों में सामाजिक यथार्थ एवं कलात्मकता 160
डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

क्षेत्रवाद, राजनीतिक अपराधीकरण, साम्प्रदायिकता और जातिवाद का प्रभाव 163
नीशू

दिल्ली सल्तनत की कानूनी व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन 166
डॉ. रिनी पुण्डीर

शिक्षा का समावेशीकरण : एक अध्ययन 169
डा.अलका सक्सेना

जनजातीय सांस्कृतिक परम्पराएं : प्रासंगिकता एवं संभावनाएं 171
डा. नरेश सिंह

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में ''बरेली के मुंशी शोभाराम और खान बहादुर खाँ का योगदान'' 173
कुलदीप गंगवार

हिंदी नाटक में गांधीवाद की अभिव्यक्ति (विशेष संदर्भ-प्रसादोत्तर नाटक) 176
डा. अवधेश कुमार

भारत में महिला शिक्षा एवं इसका महत्त्व 179
बबिता खाती

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में मानवीय संवेदना का शैक्षणिक पक्ष 182
अनिल कुमार

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में रूस की स्थिति: एक राजनीतिक विश्लेषण 185
शैलेन्द्र कुमार

शैक्षिक प्रगति और राजनीतिक विमुखता 188
डॉ. संदीप कुमार अत्री

शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा अनुसूचित जातियों में सामाजिक समावेशन का अध्ययन 190
अखिलेश कुमार पटेल/डॉ. यतीन्द्र मिश्रा

'परख' उपन्यास के नारी पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 193
सिमरन भारती

वर्तमान युग में तथागत गौतम बुद्ध के विचारों की उपादेयता 195
डॉ. माया शंकर

वैश्विक मंच पर बढ़ता हिन्दी भाषा का प्रभाव 198
डॉ. शशांक कुमार सिंह

मैत्रेयी पुष्पा और नारी अस्मिता के प्रश्न 200
डॉ. ज्योति गौतम

गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में वैयक्तिक-प्रेम की अभिव्यक्ति का स्वरूप 203
डॉ. आर.के. पाण्डेय

केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका में प्रतिचित्रण का विवेचनात्मक अध्ययन 205
कृपा शंकर

भारत-अफ़ग़ानिस्तान सम्बन्धों का समीक्षात्मक अध्ययन 207
डॉ. पुष्कर पांडे

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियों में 'माँ' के रूप में नारी : एक दृष्टि 210
डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह

'त्यागपत्र' उपन्यास में सामाजिक रुढ़ियाँ और नारी 213
डॉ. चन्द्रशेखर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा 215
डॉ. लाजो पाण्डेय

भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धों के परिवर्तित होते आयाम : एक समीक्षा 217
डॉ. नलिनी लता सचान

डा. बाबासाहब भीमराव अंबेडकर और बुद्धिज्मः नवयान 220
राजीव कुमार पाण्डेय

धर्म की पुनर्व्याख्या करता मधु कांकरिया का उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' 223
डॉ. कामना पण्ड्या

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा का प्रभाव 225
डॉ. सरोज राय

प्रतापगढ़ जनपद में कृषिगत विविधता एवं इसके विकास में जल संसाधन की भूमिका 227
कौशलेन्द्र सिंह

भारत में राज्य राजनीति के निर्धारक तत्व 229
डॉ. उपेन्द्र कुमार सिंह

राज्यों की स्वायत्तता के सम्बन्ध में विभिन्न राजनैतिक दलों की मांग 231
डॉ. शैलेन्द्र नाथ सिंह

भारत में संघवाद के प्रति राजनीतिक दलों के दृष्टिकोण 233
डॉ. राजेश कुमार सिंह

ग्लोबल गाँव के देवता : असुर जनजातीय विरासत पर भूमण्डलीकरण का दुष्प्रभाव 236
संजय कुमार सिंह

आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 238
रेनू देवी

उदय प्रकाश के साहित्य में युगबोध के भाव एवं कलात्मक आयाम 241
डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता

किशोरवय विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास : ईश्वरीय ज्ञान (मुरली) के सन्दर्भ में 243
रोशनी चन्द्राकर/डॉ.शोभा श्रीवास्तव

नरेन्द्र कोहली के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में जीवन मूल्य 245
डॉ. सन्जू

मुर्दहिया और मणिकर्णिका में बौद्ध चेतना के स्वर 247
डॉ. रणजीत कुमार

समकालीन राजनीति का जीवंत दस्तावेज : महाभोज 249
स्नेहा शर्मा

रीति कालीन कवि केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका की प्रासंगिकता 251
सुरेश चन्द्र पाल

उग्र की कहानियों में युगीन चेतना 253
डॉ. परषोतम कुमार

परदेशी राम वर्मा के 'सूतक' उपन्यास में सामाजिक जागृति 255
कमल कुमार बोदले/डॉ. अभिनेश सुराना

आधुनिक हिंदी हास्य-व्यंग्य के पुरोधा राधा कृष्ण 257
प्रमोद कुमार

लोक साहित्य : सम्यक् विश्लेषण 260
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता

'विघटन' उपन्यास में चित्रित प्रमुख नारी पात्रों की संवेदना 263
मारुती दत्तात्रय नायकू

जनसंचार माध्यम में हिंदी भाषा का योगदान 266
प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे

सुषमा मुनींद्र की कहानियों में अभिव्यक्त अध्यापक वर्ग का चरित्रांकन 268
कु. अलका ज्ञानेश्वर घोडके

विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसर 271
डॉ. उत्तम थोरात

हिंदी कहानी में स्त्री चेतना के विविध संदर्भ 273
श्रीमती सरला माधव

स्त्रीपरक लोकनाट्य 'नकटौरा' में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता के स्वर 275
डॉ. सरस्वती मिश्र

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन 278
डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

'तिरस्कृत' में हाशिये का समाज 280
डॉ. ओम प्रकाश सैनी

जयनंदन की रचनाओं में मजदूर 283
डॉ. गोपाल प्रसाद

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका 285
डॉ. सुनील कुमार

समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिकता: ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में 288
शेख उस्मान सत्तारमियाँ

नई राष्ट्रीय शिक्षण नीति में संगीत शिक्षा और संभावनाएं 291
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सूर्य : रामधारी सिंह 'दिनकर' 294
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

स्त्री पराधीनता की अंतहीन दासतां-राम रहीम 297
डॉ. रमेश यादव

भारत में महिला उद्यमिता व चुनौतियां 299
डा. सुनीता

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 302
आशुतोष कुमार दूबे/ डॉ. (श्रीमती) मधुबाला राय

प्रधानमंत्री जन-धन योजना और उत्तर प्रदेश में वित्तीय समावेशन की चुनौतियों का अध्ययन 304
डॉ. जय शंकर शुक्ल

ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के अभाव के कारण 308
डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

विकलांग-विमर्श : दशा और दिशा का मनोवैज्ञानिक अवलोकन (पुस्तक समीक्षा) 310
डॉ सीमा रानी/डॉ मीना पाण्डेय

स्वंय प्रकाश के कथा साहित्य में मार्क्सवाद का प्रभाव 315
स्मिता भारती

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता और माखनलाल चतुर्वेदी 317
डॉ. संजय कुमार मिश्र

हिन्दी शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य 319
अजय कुमार

राजनीति, राजनेता और नागार्जुन 321
अमृता रानी

बाल कहानियों की प्रासंगिकता 323
डॉ. अंजु रानी

'एलिस एक्का की कहानियाँ और आदिवासी स्त्री' 325
मो. आज़म शेख

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में आंचलिकत्ता 327
चन्द्रकला मीना/डॉ. प्रदीप कुमार मीना

'ढिबरी टाइट' कहानी संग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन 330
दीन दयाल सैनी

भारत में राष्ट्रीय एकीकरण एवं आन्तरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ 333
डॉ. दीपक कुमार अवस्थी/डॉ. मृदुला शर्मा

प्रेमचन्द की कथा दृष्टि शिवप्रसाद सिंह 336
डॉ. अजीत सिंह

साहित्य और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'बांझ घाटी' 338
डॉ. अमित सिंह

'राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी फिल्मों की भूमिका' 340
डॉ. ममता

विश्व राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताएं एवं समाधान 343
डॉ. मनीष

नई शिक्षा नीति की अवधारणा और चुनौतियाँ 346
डॉ. नंदन कुमार भारती

कल्पना पत्रिका में विदेशी साहित्य 349
डॉ. निकिता जैन

अज्ञेय के कथा साहित्य में चित्रित पात्रों का कथा में महत्त्व- 352
डॉ. रानी बाला गौड़/गरिमा वर्मा

पाकिस्तान की माँग और भारत विभाजन का एक ऐतिहासिक अवलोकन 354
डॉ. प्रशांत कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समग्र आलोचनात्मक अवलोकन 356
जाहनवी देव

शिक्षातंत्र का बदलता स्वरूप; वैदिक शिक्षा प्रणाली से आरटीई की ओर 358
कनक प्रिया

निबलेट की डायरी:अंग्रेजी प्रशासक की दृष्टि में भारत छोड़ो आन्दोलन 361
डॉ. कुलभूषण मौर्य

देशज आधुनिकता बोध के कवि त्रिलोचन 364
माधवम सिंह

'देहान्तर' नाटक की मूल संवेदना 367
ममता यादव

अस्तित्व को तलाशती शिवमूर्ति की कहानी 'कुच्ची का कानून' 369
मनीष कुमार

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज 371
नगीना मेहरा

आदिवासी साहित्य में राजनैतिक चेतना के स्वर 373
निर्मला मीना/डॉ. अशोक कुमार मीना

नारी का अन्त: संघर्ष और महादेवी वर्मा 375
पूनम शर्मा/डॉ. अरूण बाला

बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका को सशक्त बनाने के विभिन्न आयाम का एक अध्ययन 377
प्रो. (डॉ.) महबूब आलम

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता के काव्य-प्रतिमान 380
प्रो. रसाल सिंह/प्रभाकर कुमार

भारत में न्यायिक सक्रियता एवं जनहितवाद के वर्तमान स्वरूप की विवेचना 383
डॉ. राजेश कुमार शर्मा/डॉ. संगीता शर्मा

उपलब्ध प्रारूपों से परे सामाजिक सिद्धांत: एक विमर्श 386
संदीप कुमार

राष्ट्रोन्नयन की वैदिक संकल्पना 389
संगीता अग्रवाल

औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव और आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास 391
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

19 वीं सदी का आंदोलन और हिन्दी कहानी 394
डॉ. सविता डहेरिया

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श 396
डॉ. उमेश चन्द्र

'वैश्वीकरण और मीडिया' 399
सोनू रजक

प्रेमचन्द की कहानियों में हाशिए का समाज : स्त्री संदर्भ 402
सुनीता जाट

ऋतुराज के काव्य में युवा मानसिकता का सामाजिक संदर्भ 404
सुरेश कुमार वर्मा

नीति-निर्माण एंव नीति को क्रियान्वयन करने में नौकरशाही की भूमिका एक समीक्षा 406
सूर्य प्रकाश/प्रो. (डॉ. विनय सोरेन)

भक्ति साहित्य के अन्य प्रश्न और देवीशंकर अवस्थी 409
विजय कुमार गुप्ता

भारत की आजादी में दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित संपादकीय का अध्ययन 412
बिमलेश कुमार

प्रेमचंद का दलित दस्तक 414
डॉ. जियाउर रहमान जाफरी

आयुर्वेद शिक्षण व्यवस्था:औपनिवेशिक संयुक्त प्रांत निवेशिक संयुक्त प्रांत (1900ई.-1941ई.) 416
पूजा/डॉ. सतीश चंद्र सिंह

छत्तीसगढ़ राज्य में कोर-पीडीएस के प्रभाव का एक प्रशासनिक अध्ययन (धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में) 419
डॉ. श्रीमती रीना मजूमदार/डॉ. प्रमोद यादव/बिसनाथ कुमार

नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार 424
निलिशा सिंह

राष्ट्रीय आंदोलन के गांधीवादी चरण में महिलाओं की भूमिका 427
डॉ. चन्दन कुमार

बुद्धकालीन विदेह एवं अंगुत्तराप की भूमि पर पूर्व मध्यकाल में बौद्ध धर्म की उपस्थिति एवं उसका स्वरूप : एक पुरातात्त्विक अवलोकन 430
डॉ० अमिय कृष्ण

''नारी मुक्ति का स्वर मुखरित करती आत्मकथाएं'' (विशेष-सन्दर्भ, एक कहानी यह भी, अन्या से अनन्या) 433
लक्ष्मी गोंड

दार्शनिक चिंतन के आधार पर बहुआयामी व्यक्तित्व रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन 436
डॉ0 नीलम श्रीवास्तव

कठोपनिषद के आधार पर नचिकेता का चरित्र चित्रण 439
डॉ. मधु कुमारी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रादुर्भाव में तात्कालीन संस्थाओं का योगदान : एक विमर्श 441
प्रिया कुमारी/डॉ. अंजना पाठक

ऑनलाइन शिक्षा : एक समालोचनात्मक अध्ययन 443
डॉ. अश्वनी

संत दादूदयाल का 'माया' विषयक चिंतन 446
सुनील कुमार

आदिवासी समाज और विज्ञान एवं तकनीकी 449
कविता वर्मा और अनुज

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में अभिव्यक्त भाव-बोध एवं भाषिक चेतना का मूल्यांकन 452
डॉ संजय वर्मा

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति एवं इतिहासःचन्देल वंश के विशेष संदर्भ में 456
डॉ अरविन्द सिंह गौर

आधी आबादी के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ : वाया मीडिया 460
अर्चना यादव, डॉ. जयपाल मेहरा

भारत की विदेश नीति : सुषमा स्वराज के विशेष सन्दर्भ में ऋतु 463
ऋतु/डॉ. उर्मिला

भारत में कोविड-19 के मध्य प्रवास और विपरीत प्रवासनः समस्याएं और चुनौतियां 466
अरुणा परचा

प्रो. मैनेजर पाण्डेय की साहित्य और साहित्येतिहास दृष्टि! 471
लक्ष्मण

भारत में पत्रकारों पर हमलेः पत्रकारिता की अभिव्यक्ति की आजादी को खतरा 474
डॉ. परमवीर सिंह

आचार्य अभिनवगुप्त एवं रूपकों में शान्त रस 477
डॉ. सन्दीप कुमार/डॉ. चांदनी

अनुशासन विषयक तथ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन 480
–डॉ. सत्य नारायन (प्राचार्य)/विष्णु दत्त शर्मा

मुगल काल में जहाज निर्माण एक अध्ययन 488
–नीलम कुमारी

अफगानिस्तान की बदलती जियोपॉलिटिक्स और शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका 492
–प्रोफेसर श्याम मोहन अग्रवाल/डॉ. मोहन लाल जाखड़

आधुनिक राजस्थान में व्यापार एवं वाणिज्य के केन्द्रों का ऐतिहासक अध्ययन 495
–डॉ. राजेश कुमार मीना

राजस्थान के ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) का समावेषी एवं सतत विकास में योगदान : एक शोध परक अध्ययन 498
–संजू बुटोलिया एवं डॉ. गुलाब बाई मीना

''विकास और पर्यावरण का अधूरा सच मीडिया के परिप्रेक्ष्य में'' 503
–डॉ. पार्वती गोसाई

डायन-प्रथा के नाम पर झारखण्ड में महिलाओं की हत्या, उत्पीडन एवं डायन-हत्या पीड़ित परिवारों का मनोवैज्ञानिक स्थिति का अध्ययन और न्यायिक हस्तक्षेप की आवश्यकता की अनुशंसा 506
–डॉ. अनीता रंजन

छत्तीसगढ़ राज्य के मुंगेली जिले में अनुसूचित जाति के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषण *509*
–नितेश कुमार साहू

भारतीय समाज में बिहार के दलित महिलाओं की स्थिति 513
–श्वेता कुमारी

9 अगस्त ''अगस्त क्रान्ति दिवस'' को समर्पित ''राष्ट्र निर्माण और गांधी'' (1947 से 2020 तक) समसामयिक भारत के विशेष संदर्भ में 516
–डॉ. आनंद यादव

'मित्रो मरजानी' उपन्यास में नारी मूल्यों का हनन 520
–डॉ॰ रीना डोगरा

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि के साहित्य में जनजातीय संवेदना 522
–ज्योति कुशवाहा

छत्तीसगढ़ की पारंपरिक लोकगीतों में सामाजिक परिदृश्य 525
–रीना गोटे

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा का योगदान 529
–डॉ. संगीता उप्पे

रणेन्द्र के साहित्य में अभिव्यक्त आदिवासी समाज 531
–मनोज कुमार जायसवाले

''एकीकृत शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिरूचि का अध्ययन'' 534
–मनोज कुमार जायसवाले

''कोरोना काल मे दिव्यांजनो में स्वार स्वास्थ्यगत स्थिति का अध्ययन'' 539
–वजय मनिकपुरी

संस्कृत-साहित्य में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति 542
–डॉ॰ रतीश चन्द्र झो

स्त्री विमर्श के आईने में 21वीं सदी की हिन्दी कहानियाँ 545
–डॉ अनीता यादव

दाम्पत्य शोषण के विरुद्ध आथ्मचेतस स्त्री-कोमल कर्प्यू नाटक के विशेष संदर्भ में। 548
–कोमल गांधार

अज्ञेय की प्रयोगशील कविता

प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

अज्ञेय ने सामाजिक परिवर्तन से कविता के रिश्ते को जोडते हुए कहा है कि 'भारी सामाजिक परिवर्तनों के साथ काव्य की वस्तु में असाधारण विस्तार आया। कवि ने नये सत्य देखे, नये व्यक्ति सत्य भी, और उनको कहने के लिए उसे भाषा को नये अर्थ देने की आवश्यकता हुई। आवश्यकता काव्य क्षेत्र में भी प्रयोग की जननी है और जिन–जिन कवियों ने अनुभूति के नये सत्यों की अभिव्यक्ति करनी चाही सभी ने नये प्रयोग किये। ये प्रयोग अनेक दिशाओं में हुए।' आज के परिवेश का लेखक निरंतर जटिल होते जा रहे भावबोध को बोधगम्य बनाना चाहता है। वह कविता को बहुजन संवेद्य बनाना चाहता है। नए सत्य को संवेद्य बनाने के लिए प्रयोग की यह एक महत्वपूर्ण दिशा है जिसे आधुनिक हिंदी कविता में सबसे पहले अज्ञेय ने ही शिद्दत से महसूस किया और अपने पूरे साहित्य में प्रयोग की इस दिशा को एक आकार दिया।

आस्था :

मूल्यों के बदलते रहने पर भी सत्य शाश्वत का अंश है। यह व्यक्ति से परे है और वैयक्तिक प्रभावों अथवा संघर्ष और समय की अवस्थाओं से अप्रभावित रहता है। इन सारी बातों का संबंध बाह्य अभिव्यक्तियों से है, आंतरिक वास्तविकता से नहीं। विश्वास, सम्पत्तियाँ, सिद्धांत सभी अस्थायी और परिवर्तनशील है तथा उनके मूल्य बदलते रहते हैं। इसके विपरीत सत्य शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।' भारतीय परंपरा का स्वर जीवन के प्रति आस्थावादी है। अज्ञेय में आस्था और विश्वास सर्जनात्मक पद्धति है। भारतीय परंपरा में आत्मा की परिशुद्धि के लिए जीवन के प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण ही अपनाया गया है। अज्ञेय भी आस्था और विश्वास के कवि हैं। वह कहते हैं कि –

अभी न हरो, अच्छी आत्मा,
मैं हूँ, तुम हो,
और अभी मेरी आस्था है।'

अज्ञेय भारतीय परंपरा के इस आस्था के स्वर को आज के परिवेश में महत्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन अज्ञेय की आस्था अंधविश्वास नहीं है। अज्ञेय के लिए आस्था व्यक्ति को निरंतर उठते रहने की शक्ति देती है।

मरणधर्मा – जीवन और मृत्यु :

अज्ञेय की यह दृष्टि भी भारतीय चिंतन की परंपरा से जुडी हुई है। हमारे यहाँ मृत्यु जीवन का उच्च स्तर है, जन्मांतरवाद है। जीवन जहाँ मरने के लिए है वहीं क्रियाशील होने के लिए भी है। मृत्यु और जीवन हमारे यहाँ अनंत काल से समझने के विषय रहे हैं और इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मरण का धर्म ही जीवन का स्त्रोत है, यही अज्ञेय भी मानते हैं और अपनी कविता में कहते हैं –

सदियों से मैंने बस एक सीख पायी है
जो मरण–धर्मा है वे ही जीवनदायी है।'

अज्ञेय मृत्यु और जीवन को पश्चिमी दृष्टि से नहीं समझना चाहते वह उसे भारतीय दृष्टि से समझना चाहते हैं, अपनी कविता में उन्होंने ऐसा ही किया है।

मानव मन के रहस्य :

अज्ञेय की कविता मनोविज्ञान का सहारा लेकर मानव मन के रहस्यों को भी टटोलती है और मनोविज्ञान एक आधुनिक मुहावरा है। इस आधुनिक मुहावरे का प्रयोग अज्ञेय ने अपनी कविताओं में किया है। अज्ञेय का रहस्यवाद मनोविज्ञान पर आधारित है। मानव मन की मूल प्रवृत्ति के कारण ही कवि को रात क्तेरती है, कभी दिन हेरता है। मन कब क्या बोलता है कवि यह जानना चाहता है – अज्ञेय कहते हैं –

'कभी रात मुझे क्तेरती है
कभी मैं दिन को टेरता हूँ
कभी एक प्रभा मुझे हेरती है,
कभी मैं प्रकाश–कण बिखेरता हूँ
कब्से पहचानूं कब प्राण–स्व मुखर है,
कब मन बोलता है।'

यहाँ कवि मन के बोलने को सुनना चाहता है, प्राणों के स्वरों को सुनना चाहता है। यह एक रहस्यपूर्ण स्थिति है पर आध्यात्मिक नहीं है। अज्ञेय सृजन के मूल में मानव की मूल प्रवृत्तियों का बहुत बड़ा हाथ मानते हैं। क्योंकि मनोविज्ञान ने इस युग के सभी चिंतक और कवियों को अपनी अवधारणा से प्रभावित किया है। आधुनिक कवि और चिंतक मनोविज्ञान से रस ग्रहण करके सुंदर और शिव काव्य प्रदान कर सकता है। पश्चिम में मनोविज्ञान की अवचेतना की अवधारणा के कारण ऐसे साहित्य का जन्म हुआ जिसमें कुंठा, संत्रास, नग्नता और अतिशय कुरुपता थी। यद्यपि ये मानव जीवन के सत्य हैं लेकिन कहीं–न–कहीं मानव जीवन के शिव और सुंदर रूप पर हावी हो बैठते हैं। इसलिए अज्ञेय कवि से कहते हैं कि 'गहरे न जाना कहीं, आंचल बचाना सदा, दामन हमेशा पाक रखना पंकज–सा पंक में, कंज–पत्र में सलिल–सा, तुहिन की बूंद में प्रकंप हेम–शिश–सा असंपृत्त रहना। यहाँ हम अज्ञेय को अवचेतन की अवधारणा का मानव जीवन को शिव और सुंदर बनाने के लिए प्रयोग करता देखते हैं। इस प्रकार अज्ञेय एक प्रयोगशील मानसिकता के कवि सिद्ध होते हैं जो पूर्ववर्ती जातिगत अनुभवों को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते, परंपरा के प्रति अज्ञेय का सदैव ही इसप्रकार का प्रयोगशील दृष्टिकोण रहा।

परंपरा के साथ जुडाव :

अज्ञेय परंपरा का अंधानुकरण नहीं करते, वह तो परंपरा के उस तोजोमय प्रभापुंज पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहते

हैं जिससे कवि का अनुभव आलोकित हो उठे। जिससे अनुभव के नये अंकुर फूटें और नये कवि का अनुभव रुपायित हो सकें। अज्ञेय कहते हैं –

मेरी खोज
नहीं थी उस मिट्टी की
जिसको जब चाहूं मैं रौंदू : मेरी आंखे
उलझी थीं उस तेजोमय प्रभा पुंज से
जिससे झरता कण–कण उस मिट्टी को
कर देता था कभी स्वर्ण तो कभी राश्य,
कभी जीवन तो कभी जीव्य,
अनुक्षण नव–नव अंकुर स्फोटिय,
नव रुपायित।'

अज्ञेय स्वयं अपनी परंपरा के साथ प्रयोग करते रहे हैं और परंपरा के रूप को आकार देकर वह आगे बढ़ रहे हैं। वह चाहते हैं कि आनेवाली पीढी दोबारा से फिर नये संदर्भ में उसकी जांच पडताल करे। परंपरा को जांचने परखने का भी एक दर्प होता है। यह दर्प स्फीत विजय के उल्लास का और सामर्थ्य का भाव होता है। अज्ञेय के पूरे चिंतन में हमें यह दर्प दिखाई दे सकता है और अज्ञेय नये कवि में भी इस दर्प की अपेक्षा करते हैं। अज्ञेय नये कवि को एक तो परंपरा के आलोक पुंज से जुडाने की सलाह देते हैं जिससे प्राचीन अनुभव से पथ–प्रदर्शन हो, एक रास्ता दिखाई दे, लेकिन वहीं उसे सावधान भी करते हैं कि पथ पर चलते समय चौकस होकर चले। अज्ञेय के अनुसार परंपरा बालू की लिखत के समान है जिसे परिस्थितियों का प्रवाह कभी भी मिटा सकता है और उसकी जगह नयी लिखत को स्थापित कर सकता है। इसलिए अज्ञेय नये कवि से कहते हैं कि 'बालू की यह अनुभव के संशोधान में ही नये अनुभव का जन्म संभव है, और क्योंकि नया कवि नये अनुभव का जन्मदाता होता है और अपनी परंपरा का अनुसंधाता होता है। इसलिए वह अज्ञेय की दृष्टि में 'जयि युगचेता, पथ–प्रवर्तक' होगा। जब परंपरा कवि की चेतना का विकास करती है तो अज्ञेय इसका श्रेय भी परंपरा को ही देना चाहते हैं। अज्ञेय उन सबको श्रेय देते हैं जो परंपरा को लगातार विकसित करते रहे हैं।

प्रयोगशीलता :

यदि अज्ञेय प्रयोगशील मानसिकता के न होते तो वह परंपरा को, अतीत को ज्यों का त्यों स्वीकार करने की बात करते। परंतु अज्ञेय परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य खोजने की बात करते हैं। वह परंपरा और नवीनता दोनों के साथ प्रयोग करते हैं और जो मानव जीवन के लिए सार्थक, शक्तिदायी है उसे स्वीकार करना चाहते हैं। अज्ञेय कहते हैं –

सब खेतों में
लीकें पड़ी हुई हैं
(डाल गये हैं लोग)
जिन्हें गोड़ता है समाज :
उन लीकों की पूजा होती है।'

इस कविता में अज्ञेय कहते हैं कि परंपरा का एक रुप यह भी है, जहाँ पुरातनता मात्र की पूजा होती है। परंतु अज्ञेय मानते हैं कि पुरानी लीकों पर ही चलते रहने से नई लीकें नहीं बन पायेंगी। अज्ञेय का इस ढंग से सोचना उनकी प्रयोगशील मानसिकता का परिचायक है। प्रयोगशील मस्तिश्क का व्यक्ति ही परंपरा की जमीन को दोबारा अपने ढंग से, अपने समय के अनुसार तोड़ता है। यह दृष्टिकोण परंपरा के प्रति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। हिंदी साहित्य के इतिहास में 'नई कविता' का विरोध कम नहीं हुआ क्योंकि वह अपनी पुरानी काव्य–परंपरा के साथ एक नया प्रयोग था। प्रयोगशील मानसिकता के कारण ही अज्ञेय को भी विरोधों का सामना करना पड़ा, भले ही बाद में उनके प्रयोगों को स्वीकृति मिल गयी।

समर्पण :

अज्ञेय में अपनी परंपरा के प्रति समर्पण का भाव है। अपनी काव्य परंपरा के सम्मुख अपने अहं से मुक्ति का प्रयास है। इस विषय में अज्ञेय का कहना है कि हमारी प्राचीन काव्य परंपरा में अपने अहं को विलय करके लिखने की प्रथा थी। आधुनिक कविता की विशेषता यह है कि वह कवि के व्यक्तित्व के साथ अधिकाधिक बंधी हुई होती जा रही है। अज्ञेय का 'मैं, सृजन में जलकर स्वयं को सफल मानता है। रामविलास शर्मा ने लिखा है 'अज्ञेय अपने सीमित अहं की शक्ति को जोड़ देना चाहते हैं।' यानी अज्ञेय का अहं परंपरावादी उस असीम शक्ति के प्रति समर्पित होना चाहता है जो सृजना का स्त्रोत है लेकिन परंपरा में निहित जो प्रतिगामी तत्व है वहाँ अज्ञेय का अहं तना हुआ विद्रोही मुद्रा में दिखाई देता है। परंतु अज्ञेय का अहं अभिमान और अहंकार का रूप धारण नहीं करता। वह मानते हैं कि कवि विगत युगों में जो कुछ कहा जा चुका है, उस सुख का आविष्कार ही करता है यानी अपनी परंपरा का ही शोध करता है। अपने ही अहं में तो मानव एक सामाजिक अभिव्यक्ति पाता है। अज्ञेय कहते हैं –

तुम जो कुछ कहना चाहोगे
विगत युगों में कहा जा चुका
सुख का आविष्कार तुम्हारा ?
बार–बार वह सहा जा चुका ?
रहने दो, वह नहीं तुम्हारा
केवल अपना हो सकता जो
मानव के प्रत्येक अहं में
सामाजिक अभिव्यक्ति पा चुका।'

अहं के विलय के दृष्टिकोण को लेकर अज्ञेय अपनी कविता और विचार में भारत की प्राचीन काव्य परंपरा से जुडते हैं, जिसके वह हामी हैं। यह बात मात्र कहने के लिए ही उन्होंने नहीं कही है बल्कि उनकी कविताओं में यह स्पष्ट दिखाई देती है।

जीवन पद्धति :

अज्ञेय की दृष्टि व्यापक परिवेश को देखती है। इस परिवेश में टूटते हुए मानवीय मूल्य, बढता हुआ शोषण विगलित होती हुई राजसत्ता सभी कुछ कवि की चेतना पर दबाव डालती है और इन सारी परिस्थितियों का असर कवि की कविता पर पड़ता है। अज्ञेय भी यह समझते हैं कि आज हम एक नयी दुनिया का सामना कर रहे हैं जहाँ मध्ययुगीन जीवन पद्धति नहीं है बल्कि उसका स्थान विज्ञान ने ले लिया है जहाँ मनुष्य की बुद्धि को अत्यान्तिक माना जाता है। यांत्रिक उन्नति से जो परिवेश बना है उसने मानव के सामने एक ऐसे संकट को पैदा किया है जो पहले नहीं था। अज्ञेय का कवि भी परिवेश की इस घुमडन और त्रास को महसूस करता है जहाँ मशीनों की गड़गड़ाहट में आत्माएँ प्यासी हैं व अनुभव करते हैं।

किंतु यहाँ आसपास
घुमड़न है, त्रास है
मशीनों की गड़गड़ाहट में
भोली (कितनी भोली) आत्माओं की
अनुरणान की मोहमयी प्यास है।
यंत्र हमें दलते हैं
और हम अपने को धलते हैं
थोडा और खट लो थोडा और पिस लो –
यंत्र का उद्देश्य तो बस शीघ्र अवकाश है।
और अवकाश मात्र एक अवकाश है।
बाहर हैं वे – वही तारे, वही एक शुक्र तारा
वही सूनी ममता से भरा आकाश है।'

इस कविता में अज्ञेय नये संदर्भ में पुराने और नये परिवेश को देखते हैं। जहाँ यंत्र का आविष्कार हमें बदलता है वहीं कविता के पुराने उपादान 'वही तारे, वही एक शुक्र तारा, वही सूनी ममता से भरा आकाश आज तक सूनेपन को जन्म देती

है। यानी जिस ढंग से पहले का व्यक्ति आकाश और तारों की छाया में मानसिक शांति और बह्रा–पूरा मन महसूस करता था आज विज्ञान जन्य परिवेश में वह शेष नहीं रहा है। प्रकृति के संपर्क से व्यक्ति लगातार कटता जा रहा है और यांत्रिकता के संपर्क में अधिक–से–अधिक आता जा रहा है और इसका कारण है बदलता हुआ परिवेश। कविता में इस अनुभव को लेकर अज्ञेय प्रयोग करते हैं और बदलते परिवेश के सत्य को उद्‌घाटित करते हैं।

अज्ञेय परंपरा के ऐसे तत्वों को स्वीकार कर लेते हैं जो जीवन को उदात्त बनाने में सहायक होते हैं। उन्होंने अपनी कविता में प्रकृति को देखने की वह दृष्टि अपनाई है जो जीवन को मुकम्मल बनाये। अज्ञेय प्रकृति के संपर्क में आकर उसके उदात्त तत्वों से प्रभावित होते हैं और उनसे प्रभावित होकर उन तत्वों को मानव जीवन में देखना चाहते हैं और एक मुकम्मल जीवन के निर्माण की बात सोचते हैं। यहाँ हमें प्रकृति और मनुष्य के बीच में एक संबंध दिखाई देता है।

अज्ञेय का समूचा साहित्य विशेषकर उनकी कविता आधुनिकता की ऐसी सार्थक दृष्टि का निर्माण करती है जिसका उत्स भारतीय भावभूमि है। उनकी प्रयोगशील दृष्टि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बदलते हुए जीवन और जीवन मूल्यों की स्पष्ट पहचान कराती है। अज्ञेय की कविता में जहाँ एक ओर नया भावबोध, नया परिवेश, नयी जीवनदृष्टि दिखाई देती है वहीं अपनी परंपरा के प्रमुख तत्वों के साथ प्रयोग भी दिखाई देते हैं। इसीलिए अज्ञेय की कविता में परंपरा प्रयोग संबंधता स्थिति में दिखाई पडते हैं। अज्ञेय अपनी कविता में भारतीय परंपरा के आस्थावादी स्वर को पहचानते हैं। आज जबकि साहित्य और जीवन में क्तेर यथार्थवादी प्रवृति ने मनुष्य को भौतिकवादी और व्यक्तिवादी दायरों में जकड़कर रख दिया है ऐसी स्थिति में अज्ञेय यथार्थ के अधूरेपन को कविता में उजागर करते हैं। वास्तव में काव्य में कवि का व्यक्तित्व नहीं, वह माध्यम प्रकाशित होता है जिसमें विभिन्न अनुभूतियाँ और भावनाएँ चमत्कारिक योग में युक्त होती हैं। काव्य एक व्यक्तित्व की नहीं, एक माध्यम की अभिव्यक्ति है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अज्ञेय सृजन प्रक्रिया को नितांत निजी चीज नहीं मानते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सृजन प्रक्रिया पूरी तरह से अपनी परंपरा, अपने जातिगत अनुभव से जुडकर ही फलीभूत होती है।

संदर्भ ग्रंथ :–

स्रोत–सेतु – अज्ञेय

आधुनिक हिंदी साहित्य – अज्ञेय

पूर्वा – अज्ञेय

अरी ओ करुणा प्रभामय – अज्ञेय

आंगन के पार द्वार – अज्ञेय

नदी की बांक पर छाया – अज्ञेय

पूर्वा–हरी क्तस पर क्षण भर – अज्ञेय

आत्मनेपद – अज्ञेय

पूर्व और पश्चिम– डॉ. राधाकृश्णन

नयी कविता और अस्तित्ववाद– रामविलास षर्मा

अज्ञेय की कविता परंपरा और प्रयोग– रमेश शिकल्प

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

प्रा.संभाजीराव कदम महाविद्यालय, देऊर

सातारा–महाराष्ट्र 415524

□□